L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART- II
B.A PAPER- III
Psychology (Honours)
Social psychology.

Dr. Pramod Kumar Sahu,
Assistant Professor.
Guest Teacher.
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumarsahu2018 @gmail.com.
V.S.J. College Rajnagar

TOPIC- Meaning and Nature of Aggression.

आक्रामकता के अर्थ एवं स्वरूप:- आक्रामकता एवं हिंसा एक ऐसा व्यवहार है जो मनुष्यों तथा पशुओं दोनों में पाया जाता है। अतः आक्रामक व्यवहार एक सार्वभौमिक घटना है। यही कारण है कि इसके अध्ययन में समाज मनोवैज्ञानिकों ने विशेष अभिरुचि दिखलायी है। यह अभिरुचि के कारण ही है कि आक्रामकता को पहले समाज मनोवैज्ञानिकों ने अनेक तरह से परिभाषित करने की कोशिश किया है, जिनमें पर पहले हम कुछ प्रमुख प्रमुख परिभाषाओं पर विचार करेंगे।

बस (Buss 1961) ने आक्रामकता (Aggression) की एक सरलतम परिभाषा देते हुए कहा है। आक्रामकता एक ऐसी अनुक्रिया है जो दूसरे प्राणी को एक अनिष्टकर उद्दीपक देती है। परन्तु यह परिभाषा अधिक विस्तृत स्वरूप होने के कारण समाज मनोवैज्ञानिकों को मान्य नहीं है, जैसे कुछ समाज मनोवैज्ञानिकों ने यह आपत्ति उठाया कि यदि बस (Buss) की परिभाषा को सही मान लिया जाता है तो एक दंत चिकित्सक द्वारा दाँत की सफाई करने के लिए किया गया, दाँत को उखाड़ना भी आक्रामक व्यवहार कहलायेगा, हालाँकि यह स्पष्ट है कि दंत चिकित्सक का उद्देश्य रोगी को रोगमुक्त करना है न कि उसे हानि पहुँचाना है। कहने का तात्पर्य यह है कि बस की परिभाषा में आक्रामक व्यवहार करने वाले व्यक्ति के उद्देश्य या अभिप्राय को ध्यान में नहीं रखा गया है जो एक आवश्यक तत्व है। आक्रामकता के तात्पर्य दूसरे के प्रति किये गये, जानबूझकर अहित या हानि से होती है।

II

इस परिभाषा से स्पष्ट है कि आक्रामक व्यवहार उस व्यवहार को कहा जाता है। व्यक्ति को किसी हानि या क्षति तो नहीं पहुंचाता है। बल्कि हानि पहुंचाने के बारे में हानि या क्षति पहुंचाने का उद्देश्य भी रखता है

कुछ समाज मनोवैज्ञानिकों ने आक्रामकता में उद्देश्य या अभिप्राय को सम्मिलित किए जाने पर यह कहते हुए आपत्ति जताया है। यह एक ऐसा संप्रत्यय (concept) है। जिसे प्रत्यक्ष रूप से जाना या मापा नहीं जा सकता है अतः आक्रामकता की परिभाषा में इसे सम्मिलित नहीं किया जाना चाहिए। परंतु अन्य समाज मनोवैज्ञानिक इस आपत्ति से बहुत अधिक सहमत नहीं है। और इसे खंडित करते हुए इन लोगों ने कहा है कि मनोवैज्ञानिक इन प्रमाणों या अवस्थाओं के जांच के आधार पर मनुष्य के आक्रामक व्यवहार के उद्देश्य के बारे में अनुमान लगाते हैं जो ऐसे व्यवहार के पीछे होते हैं। परिणामस्वरूप अधिकतर समाज मनोवैज्ञानिकों ने उद्देश्य को महत्वपूर्ण मानते हुए आक्रामक व्यवहार को परिभाषित किया है। (Baron & Byrne 1987) के शब्दों में आक्रामकता एक ऐसा व्यवहार होता है। जिसका लक्ष्य दूसरों को क्षति पहुंचाना या घायल करना होता है। तथा जिससे बचने के लिए वह प्रेरित होता है।

(Myers 1988) के अनुसार आक्रामकता एक ऐसा शारीरिक या शाब्दिक व्यवहार है। जिसका उद्देश्य किसी को चोट पहुंचाना होता है।

(Smith & Hilgard 1987) के अनुसार आक्रामकता एक ऐसा व्यवहार होता जिसका उद्देश्य दूसरों को शारीरिक रूप से या शाब्दिक रूप से चोट पहुंचाना होता है। या दूसरे के सामान आदि को क्षति पहुंचाना होता है।

कोई भी क्रिया जिसका अभिप्राय दूसरे को हानि पहुंचाना होता है तो आक्रामकता कहा जाता है
कोई भी क्रिया जिसका अभिप्राय दूसरे को हानि पहुंचाना होता है तो आक्रामकता कहा जाता है

आक्रामकता एक ऐसा व्यवहार होता है जो जान बूझकर किसी व्यक्ति या उसकी सम्पत्ति को हानि पहुँचाने के उद्देश्य से किया जाता है। अतः बिना उद्देश्य के परन्तु किये किसी व्यवहार को आक्रामक नहीं कहा जा सकता है। जैसे कोई क्रिकेटर मैच में गेंद के उछालने से बल्लेबाजों को चोट की पश्चात् चपत लगा देना एक आक्रामक व्यवहार नहीं कहलायेगा क्योंकि क्रिकेटर का उद्देश्य वास्तव में चोट की नीयत पहुँचाना नहीं है। रमेश नामक फर्ज कर लीजिए कि एक शिक्षक छात्र पर गोली चलाता है परन्तु संयोग से वार खाली चला जाता है। यहाँ पर शिक्षक के व्यवहार का उद्देश्य क्षति पहुँचाना है। परन्तु किन्हीं कारणों से क्षति नहीं हुई, क्षति पहुँचाने का उद्देश्य होने के कारण शिक्षक के व्यवहार निश्चित रूप से एक आक्रामक व्यवहार कहलायेगा।

(2) आक्रामक व्यवहार की अभिव्यक्ति प्रकट रूप से होती है या अप्रकट रूप से हो सकती है। उपर्युक्त उदाहरण में शिक्षक ने गोली चलाई, आक्रामक व्यवहार की अभिव्यक्ति प्रकट थी किन्तु आक्रामकता को समाज मनोवैज्ञानिकों ने खुले प्रकार आक्रामकता कहा है। आक्रामक व्यवहार करने की अभिव्यक्ति छिपी हुई या अप्रकट रूप से हो सकती है जैसे एक राजनैतिक नेता अपने विरोधी नेता के प्रति नम्रता का भाव प्रकट करते हुए भी उसकी हार का प्रचार कर सकता है। जिससे वह अपने विरोधी नेता को हराकर चुनाव जीत सके। यहाँ अभिव्यक्ति छिपी हुई है। ऐसे आक्रामकता को भावनात्मक आक्रामकता कही जाती है।

(3) आक्रामकता में पीड़ित या लक्ष्य व्यक्ति आक्रामक व्यवहार से बचने की कोशिश करता है। इसका मतलब यह हुआ कि यदि पीड़ित व्यक्ति उसके आक्रामक व्यवहार से बचने के प्रयत्न नहीं करता है, तो उसे आक्रामक व्यवहार नहीं कहा जायेगा,

आक्रमकता के स्वरूप समाज विरोधी एवं असामाजिक तथा - यह दोनों के बाद - स्वीकृत कुछ भी हो सकता है। समाज विरोधी आक्रमकता की तरह वैसे आक्रमक व्यवहार जो होता है जो समाज के नियमों के विरुद्ध होता है। जैसे किसी को गाली देना, तमाचा मारना आदि यह कार्य भी आक्रमकता एक बुरा व्यवहार माना जाता है। परंतु कुछ आक्रमकता - ऐसे होते हैं जो समाज के नियमों के अनुकूल होते हैं जिसे असामाजिक आक्रमकता कहा जाता है जैसे - माता पिता के अनुशासनात्मक व्यवहार पुत्र की शरारत के आक्रमक आदेश की सिपाहियों द्वारा पालन करना आदि सभी असामाजिक आक्रमकता के उदाहरण हैं, यह दोनों के बीच कुछ आक्रमक व्यवहार होते हैं जिसे अनुमोदित आक्रामकता कही जाती है। इस तरह के आक्रमकता में ऐसे आक्रमक व्यवहार सम्मिलित होते हैं जिसकी जरूरत सामाजिक मानकों के अनुसार तो नहीं होती है परंतु उन्हें उनकी सीमा के भीतर रखा जा सकता है जैसे व्यवहार स्वीकृत नैतिक मानकों का अतिक्रमण नहीं करते हैं, जैसे एक बलात्कारी को महिला द्वारा मारना अनुमोदित अतिक्रमण नहीं करते हैं तो बलात्कारी को महिला द्वारा तमाचा मारना अनुमोदित आक्रमकता का उदाहरण है।

Dr. Pramod Kumar Sekhar
Date: 31/08/2020
Sub: Psychology

Scanned with CamScanner